रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

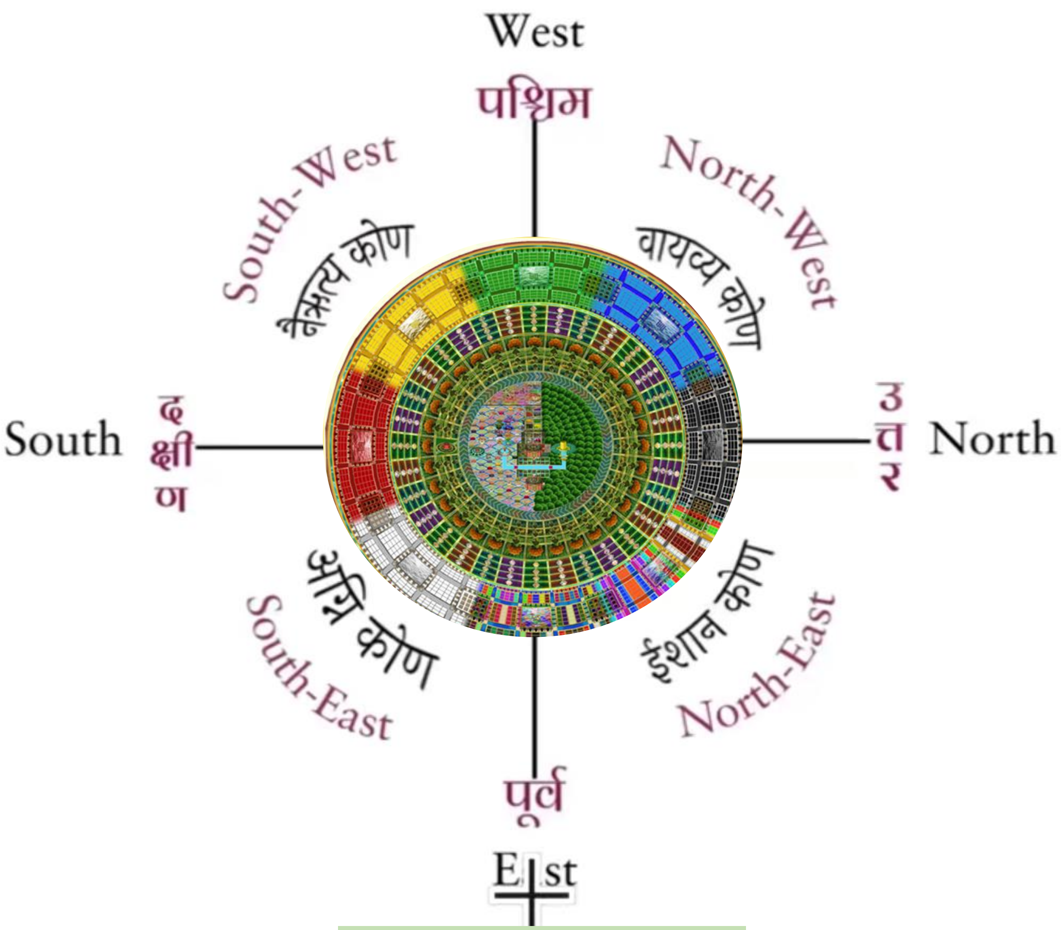

7:30PM – 9:00PM
पाचमा प्रहर

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

इत निरत हमेशा होत है, पन्द्रा दिन खेले वन ।
पन्द्रे दिन हैं निरत के, सब भोम ठौर रोशन ।।५८।।

एह खल एक पाहिरें लग, हीत हमेसा इत ।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत ।।७३।।

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत ।।७४।।

नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर ।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर ।।६३।।

महामत कहे ए मोमिनों, नेक निरत कह्या में तुम ।
तुम हो आशक हक के, दिया तुम को अपना हुकम ।।१०३

रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

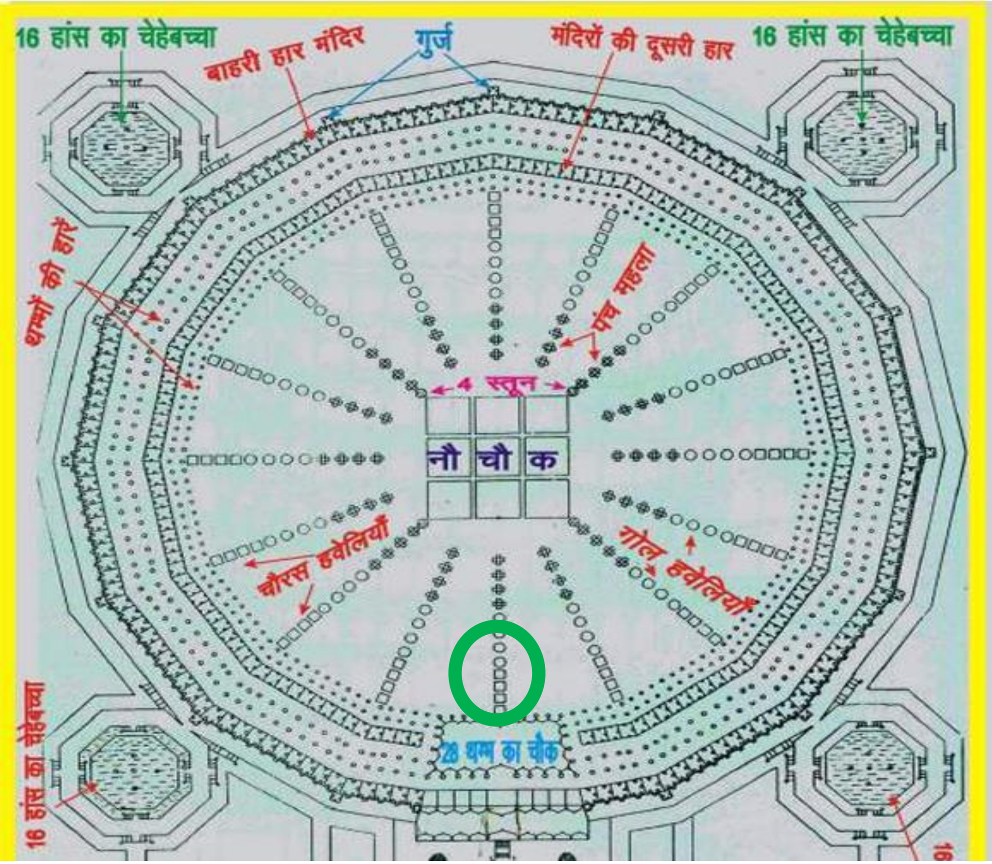

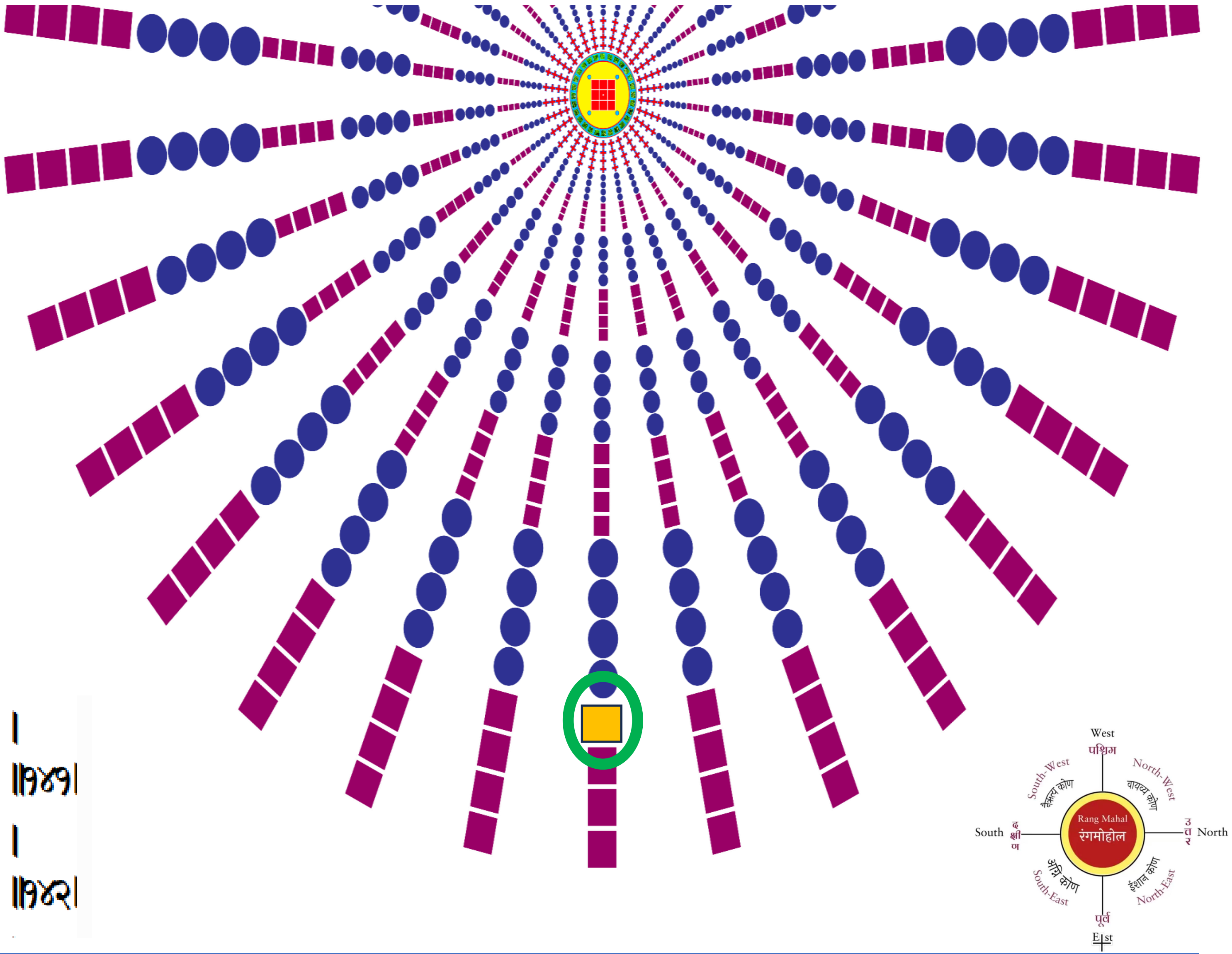

बनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मन्दिर ।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी ।।१४१।।
निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई ।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें ।।१४२।।

रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

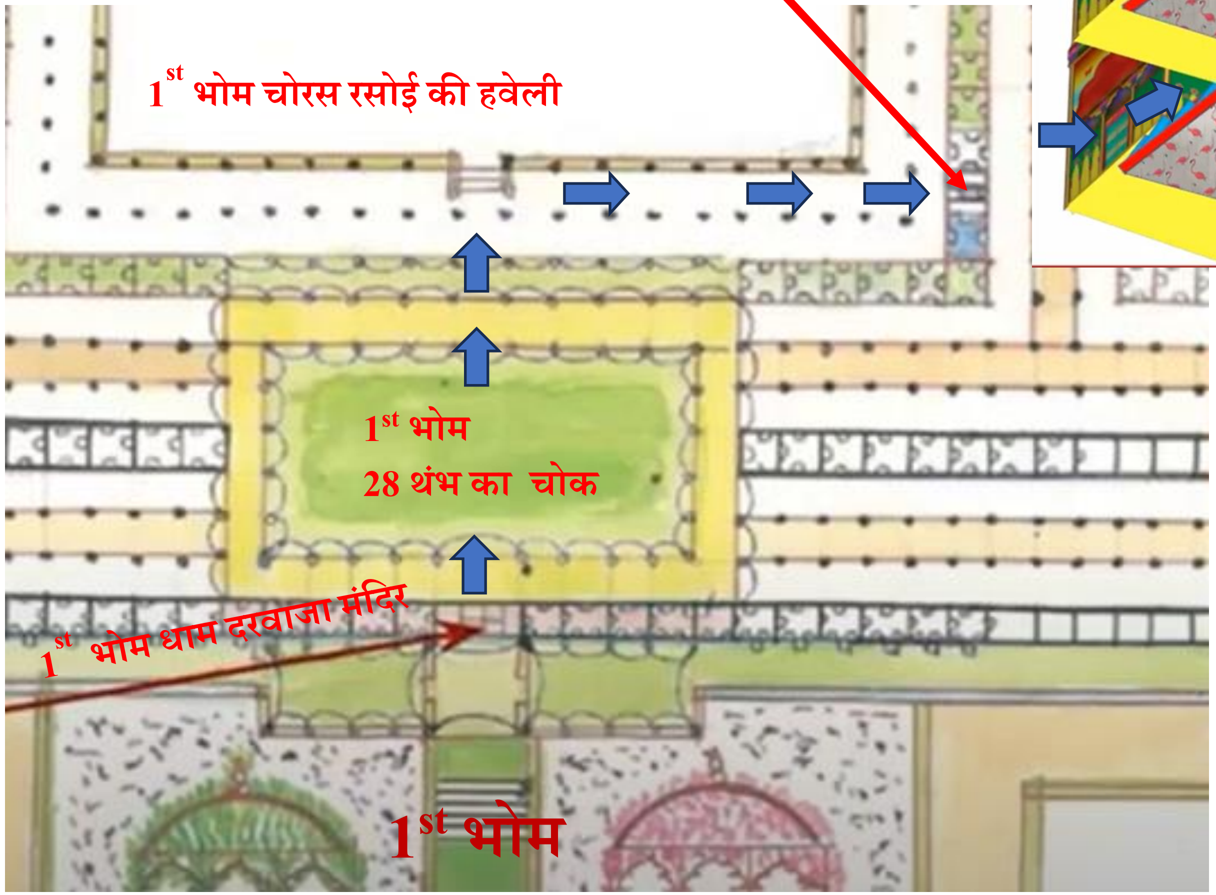

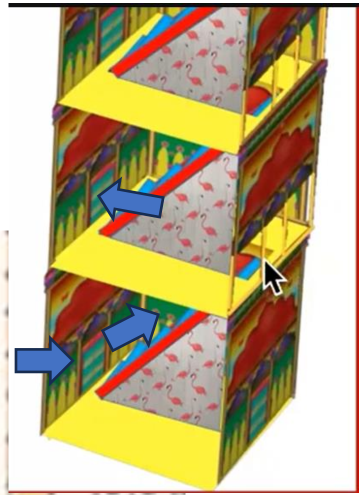

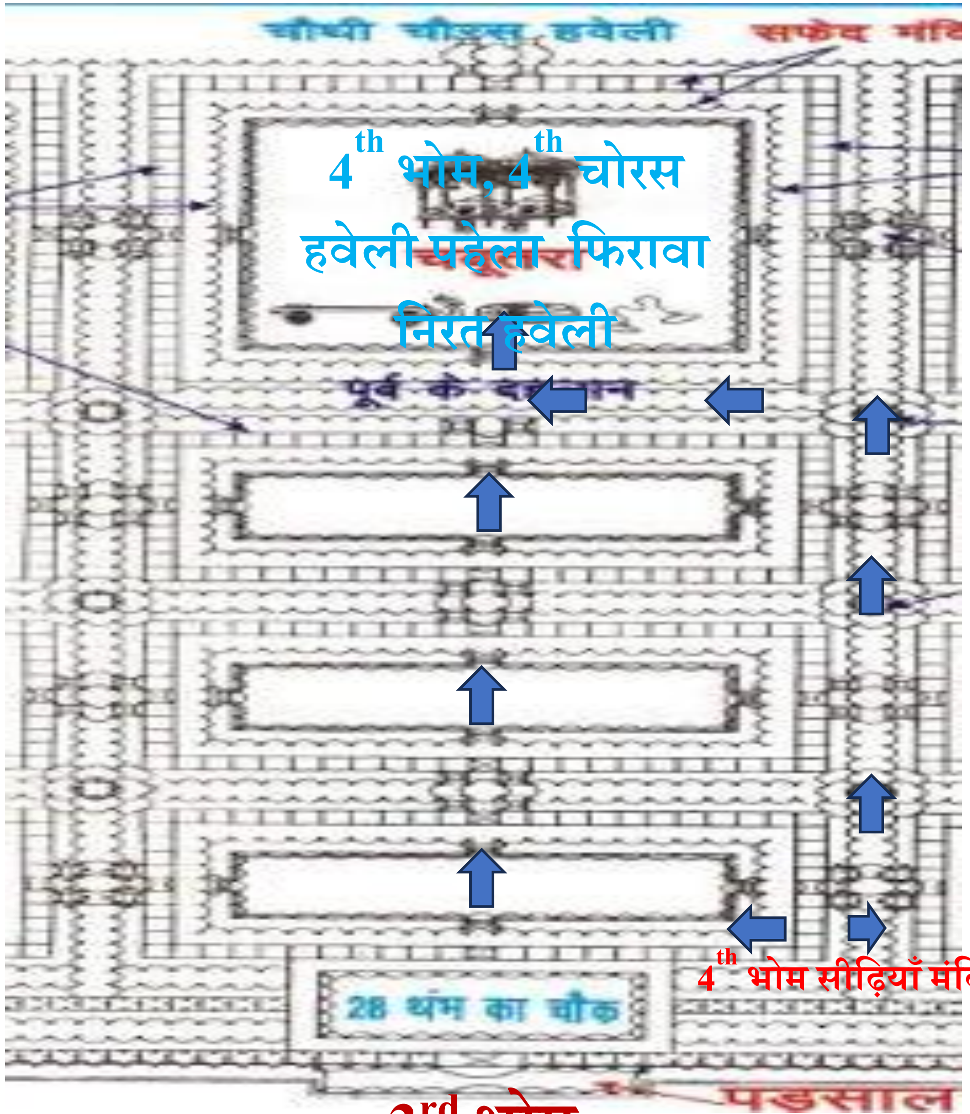

रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

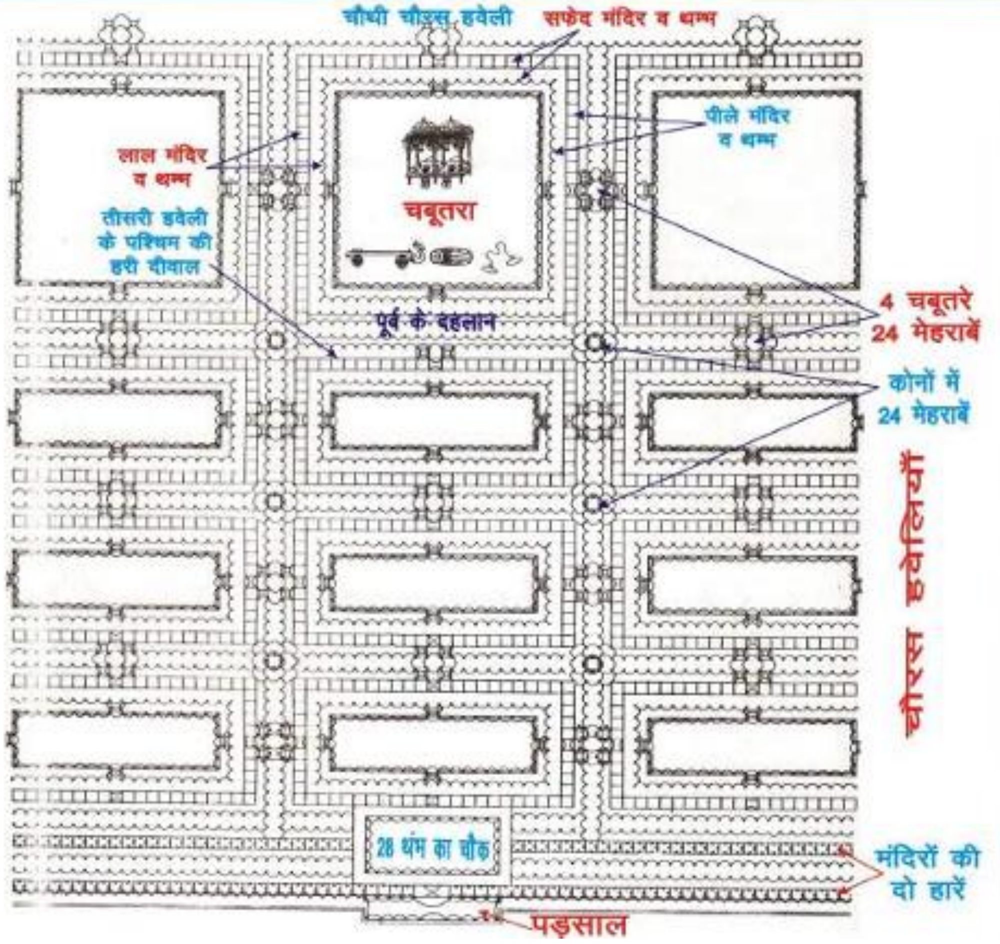

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल ।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार ॥४३॥

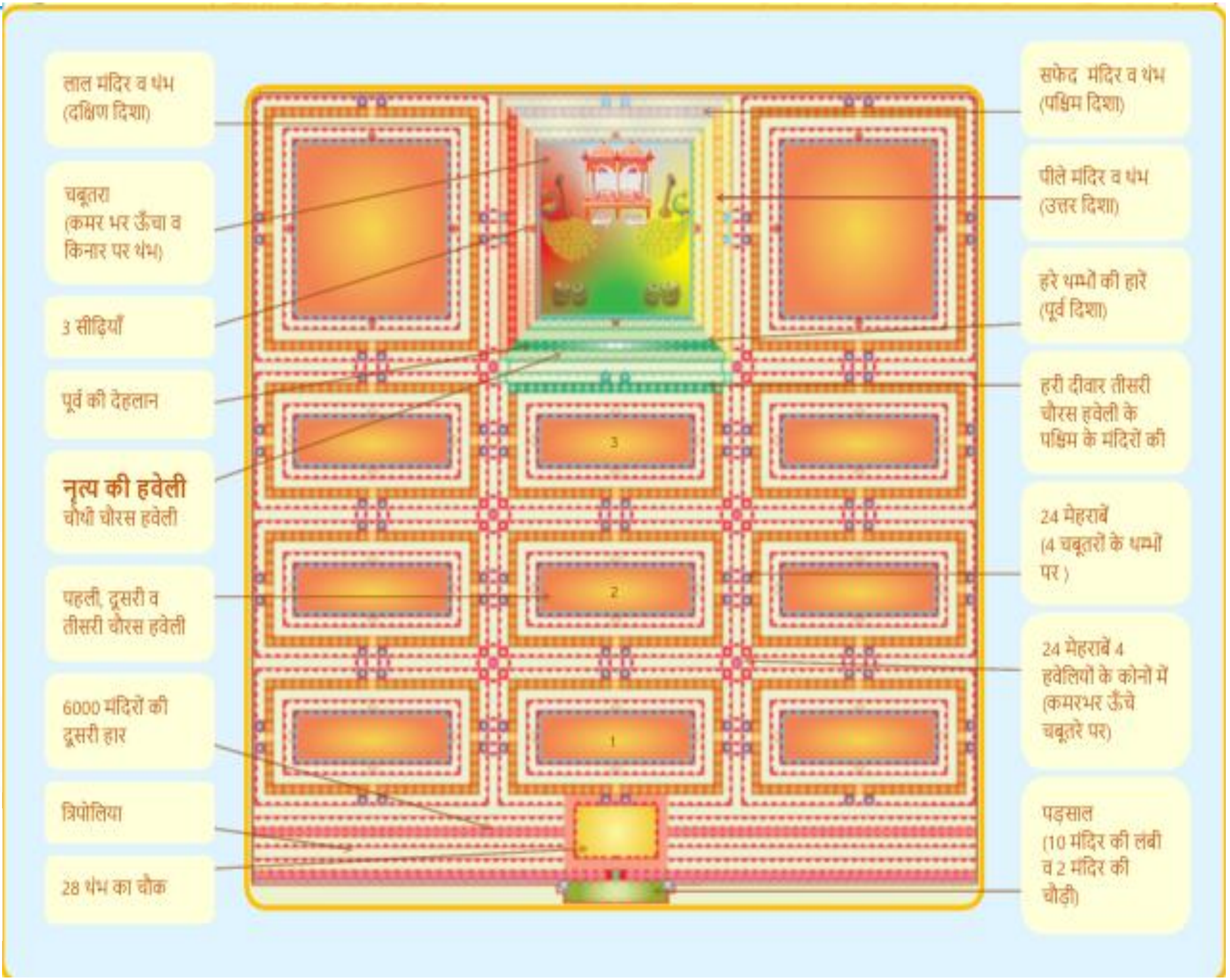

रंगमहल चौथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

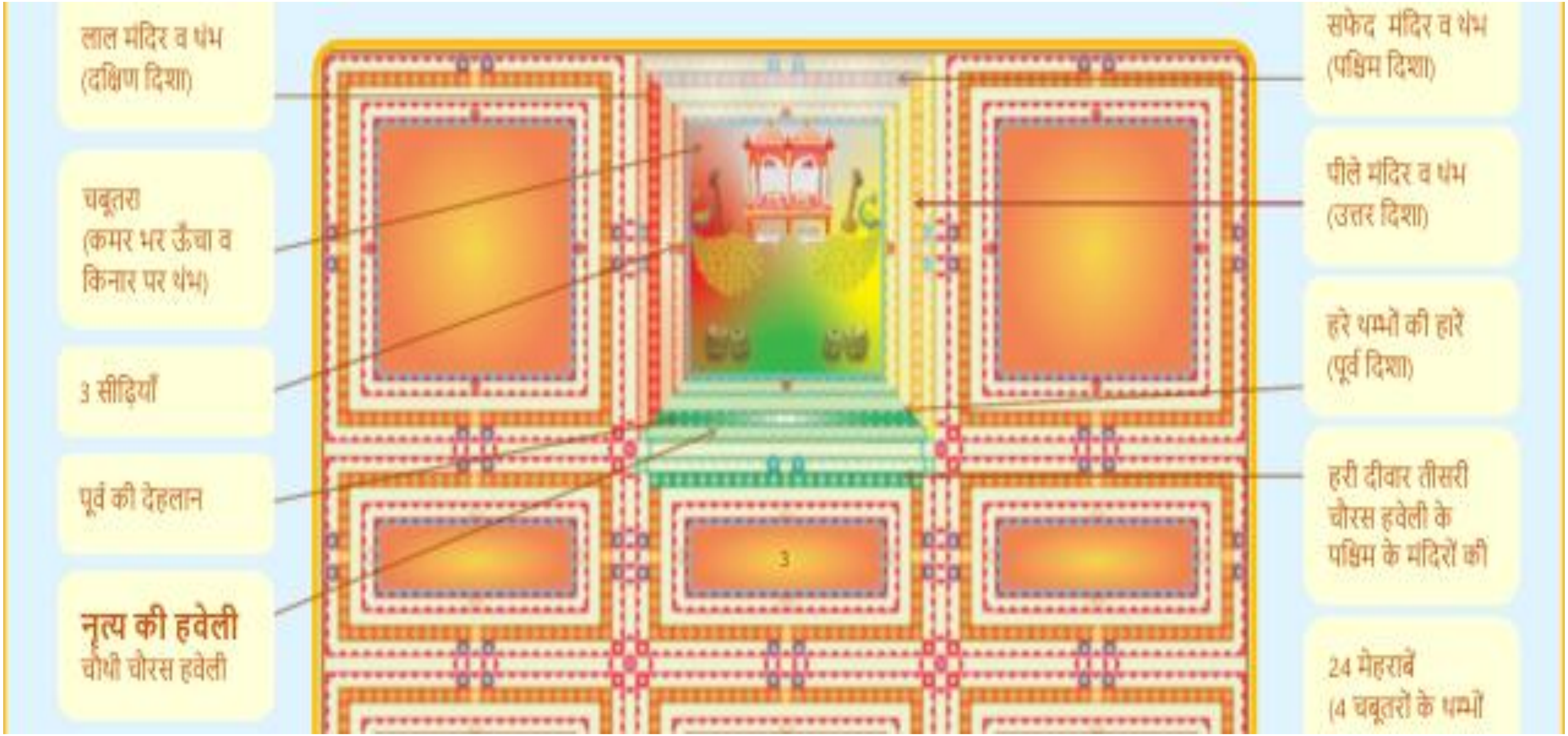

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार ॥४४॥

थम्भों लगत सिंघासन, ज्यों है मूल मिलावे के ।
शोभित रंग कंचन, त्यों ही रोशन जानियों सोए ॥५७॥

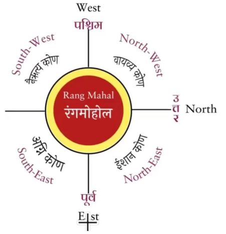

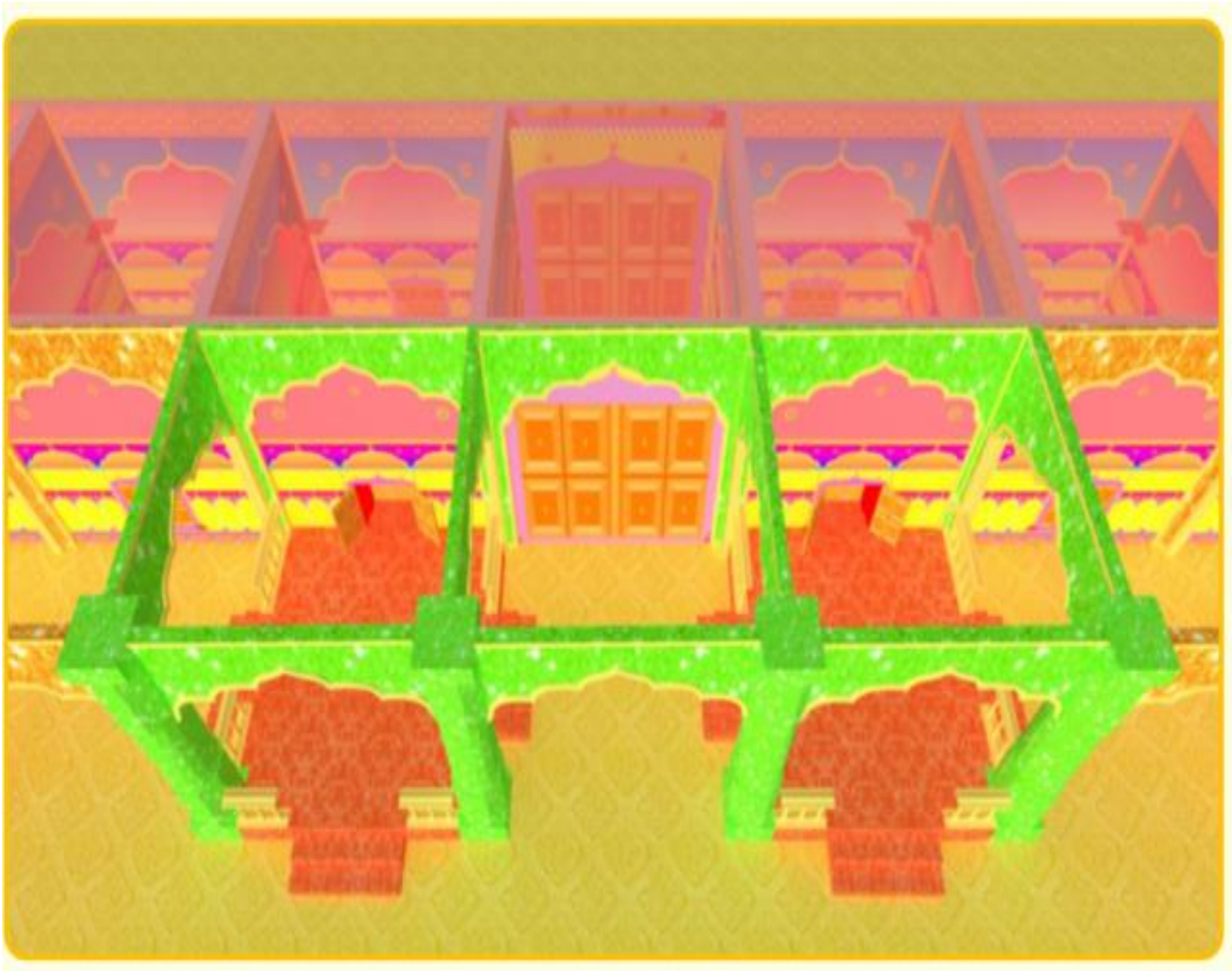

चारों तरफों चार द्वार हैं, ताकी दिस है चार ।
दिस पश्चिम सुपेत है, है मंदिर बीस की हार ।।५१।।

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार ।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार ।।४६।।

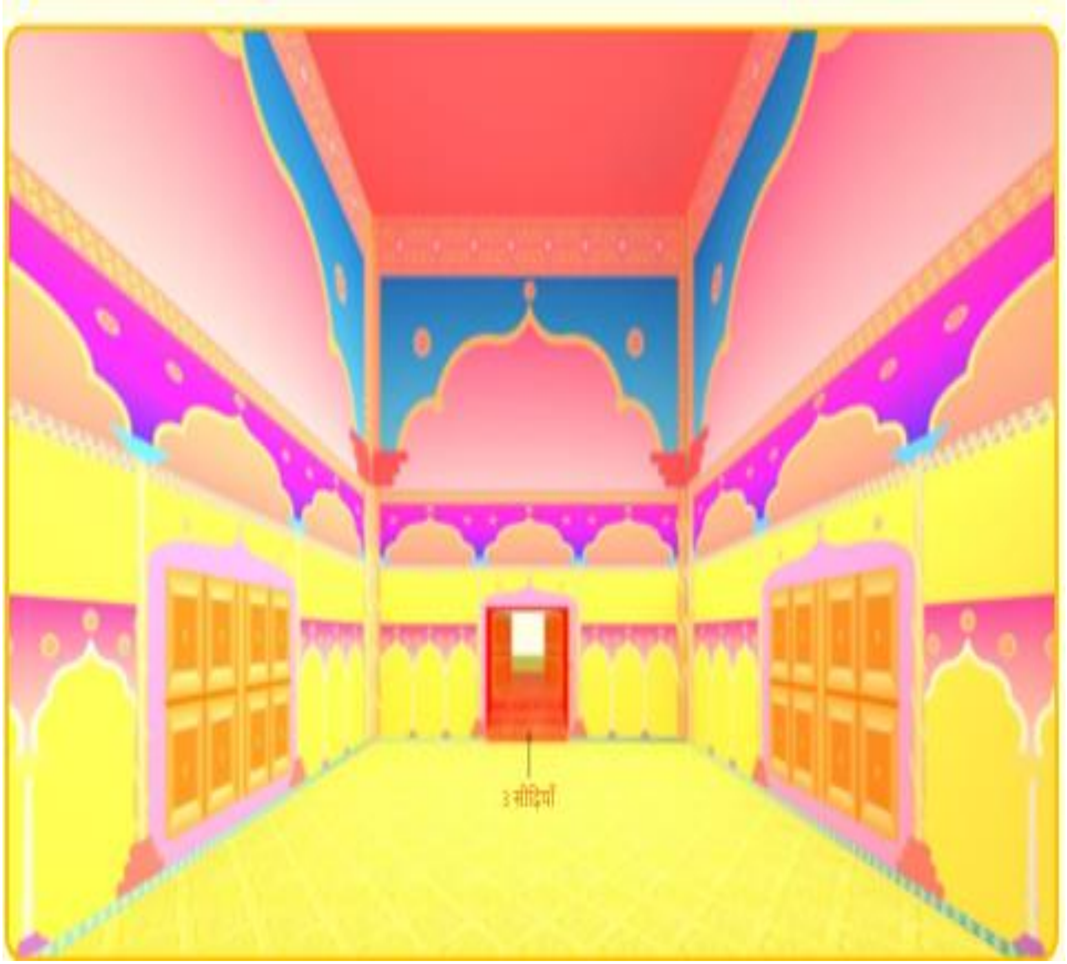

रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली

विडिओ : https://www.youtube.com/watch?v=TCv_X9IKmu8

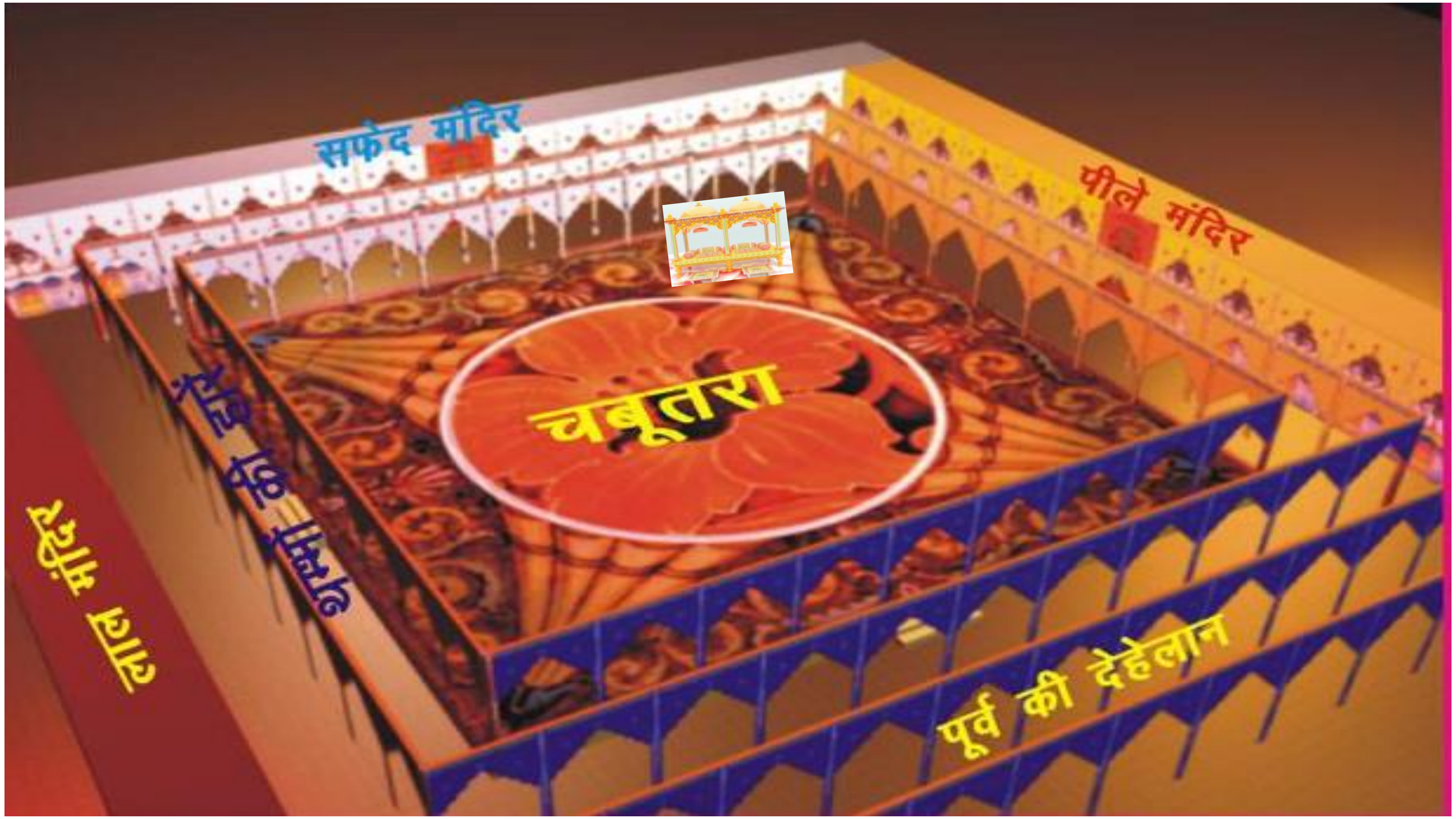

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार ।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार ॥४४॥

थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर ।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर ॥४५॥

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार ।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार ॥४६॥

पीठ पीछे जो मंदिर, कई रंग सेत दिवाल ।
दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल ॥४७॥

बांई तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग ।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग ॥४८॥

चारों तरफों चार द्वार हैं, जहां सामने सेत दिवाल ।
द्वार लगते सिंघासन, देख मोमिन होत खुसाल ॥५५॥

देहेलान से जब पैठिए, तरफ दाहिने सिंघासन ।
हक हादी रूहें बैठत, गिरद फिरती रूहें मोमिन ॥५६॥

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल ।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार ॥४३॥

थम्भों लगत सिंघासन, ज्यों है मूल मिलावे के ।
शोभित रंग कंचन, त्यों ही रोशन जानियों सोए ॥५७॥

राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन ।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन ॥५१॥

कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत ।
हाथ पांउ अंग बालत, कही न जाए सिफत ॥५२॥

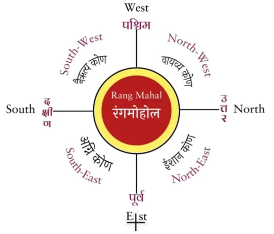

नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर ।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर ॥६३॥

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत ॥७४॥

Sahoor

OR

Quiz

Quiz - रंगमहल चोथी भोम – निरत की हवेली